

h3 style="text-align:center">NCERT Solutions for Class 6th Sanskrit: Chapter 10

## LearnCBSE.in

कृषिकाः कर्मवीराः

(कर्मवीर किसान)

# पाठ का परिचय (Introduction of the Lesson)

इस पाठ में हमारे अन्तदाता किसानों को कर्मठता और उनके संघर्षमय जीवन के विषय में बताया गया है। सर्दी गर्मी के कघ्टों को सहन करते हुए वे हम सब के लिए अन्न का उत्पादन करते हैं। अत्यधिक परिश्रम करने के उपरांत भी उन्हें निर्धनता का जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

### पाठ - शब्दार्थ एवं सरलार्थ

(क) सूर्यस्तपतु मेघाः वा वर्षन्तु विपुलं जलम्। कृषिका कृषिको नित्यं शीतकालेऽपि कर्मठौ॥1॥ ग्रीष्मे शरीरं सस्वेदं शीते कंपयमयं सदा। हलेन च कुदालेन तौ तु क्षेत्राणि कर्षत:॥2॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) : सूर्यस्तपतु (सूर्यः + तपतु) – सूर्य तपाये (the Sun may burn), वर्षन्तु-बरसाएँ (may rain), विपुलम्-बहुत सारा (huge amount), कृषिका-किसान की स्त्री अथवा स्त्री किसान (a farmer's wife or a lady farmer), कर्मठौ-काम में लगे हुए (active), सस्वेदम्-स्वेद (पसीने) से युक्त (full of sweat), कर्षत:-जुताई करते हैं (to plough), कृषिक:-किसान (farmer), कुदालेन-कुदाल से (with spade)।

अन्वयः (Prose-order)

सूर्य: तपतु मेघा: वा विपुलं जलं वर्षन्तु। कृषिका कृषक: (च) शीतकाले अपि नित्यम् कर्मठी (स्त:) ग्रीक्मे शेरीरं सदा सस्वेदम् शीते (च) कंपमयम् (अस्ति); तौ तु हलेन कुदालेन च क्षेत्राणि कर्षतः। मालार्थ :

चाहे सूरज तपाये या बादल अत्यधिक बरसें किसान तथा उसकी पत्नी सदा सरदी में भी काम में लगे रहते हैं।

गरमी में शरीर पसीने से भरा हुआ होता और ठंड में कंपनयुक्त अर्थात् कॉॅंपता रहता है किंतु फिर भी वे दोनों हल से अथवा कुदाल से खेतों को जोतते रहते हैं।

### **English Translation:**

The Sun may burn or the clouds may pour huge amount of water, the farmer and his wife are always active even in winter.

In summer the body is always full of sweat and in winter he shivers i.e, it is shivering but they keep on ploughing the fields with their plough or with the spade.

- arn CBSE.in

(ख) उपानहौ न पादयोः शरीरे वसामिल्योगे nCBSE.in निर्धनं जीवनं कष्टं सुखं दूरे हि तिष्ठति॥३॥ गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारियतुं क्षमम्। तथापि कर्मवीरत्वं कृषिकाणां न नश्यति।।।।।

शब्दार्थाः (Word Meanings) : उपानहौ-जूते (shoes), पादयो-पैरों में (on feet), वसनानि-वस्त्र (clothes), तिष्ठति-रहता है ( stays), जीर्णम्-पुराना (old), वृष्टिम्-बारिश को (rain), वारियतुम्-रोकने के लिए (to ward off), क्षमम्-समर्थ (able/capable). कर्मवीरत्वम् - कर्मठता (activity/active nature), न नश्यति - नष्ट नहीं होता (is not destroyed/ does not stop)!

अन्वय: (Prose-order)

पादयो: उपानहौं न: (स्त:) शरीरे वसनानि न (सन्ति), निर्धनम् जीवनम् कष्टम्, सुखम् दूरे हि तिष्ठति। जीर्णम् गृहम् वर्षासु वृष्टिं वारियतुम् क्षमम् न (अस्ति); तथापि कृषिकाणाम् कर्मवीरत्वं न नश्यति। सरलार्थ :

पैरों में जूते नहीं, शरीर पर कपड़े नहीं, निर्धन, कष्टमय जीवन है, सुख सदा दूर ही रहता है। घर टूटा-फूटा (पुराना) है, वर्षा के समय बारिश (अर्थात् बारिश का पानी अंदर आने से) रोकने में असमर्थ है। तो भी किसानों की कर्मीनष्ठा नष्ट नहीं होती अर्थात् वे कृषि के काम में लगे रहते हैं।

#### **English Translation:**

There are no shoes on the feet, no clothes on the body. Life is full of poverty and there are difficulties and comforts stay far away.

Their dwelling is old and during rains it is not able to keep off the rain i.e; the rain water (from seeping in.) but their activity (hardwork) does not stop.

(ग) तयोः श्रमेण क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि सर्वदा। धरित्री सरसा जाता या शुष्का कण्टकावृता॥५॥ शाकमनं फलं दग्धं दक्ता सर्वेभ्य एव तौ। क्ष्या-तुषाकुलौ नित्यं विचित्रौ जन-पालकौ॥६॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) : तयो:-उन दोनों के (both of them), सस्यपूर्णानि-फसल से भरे (full of crops), सर्वदा-हमेशा (always), धरित्री-धरा (earth/land), सरसा-रसपूर्ण/हरी-भरी (full of greenry), शुष्का-सूखी (dry), कण्टकावृता (कण्टक + आवृता)-काँटों से ढकी हुई (covered with thorns), शाकमन्नम् (शाकम् + अन्नम्)-सञ्जी तथा अन (vegetables and grains), दत्त्वा-देकर (giving), क्षुधा-तृषाकुलौ (तृषा + आकुलौ )-भूख-प्यास से व्याकुल (distressed with hunger and thirst)।

ः संस्कत–VI —

### LearnCBSE.in

अन्वयः (Prose-order) Learn CBSE.in तयोः श्रमेण क्षेत्राणि सर्वदा सस्यपूर्णीन (सन्ति), या धारित्री शुष्का कण्टकावृता (च आसीत्) (सा)

तौ सर्वेभ्य: एव शाकम् अन्नम् फलं दुग्धं (च) दत्त्वा नित्यं क्षुधा-तृषाकुलौ (स्त:) (तौ) विचित्रौ जनपालकौ (स्तः)।

#### सरलार्थ :

उन दोनों (किसान तथा उसकी पत्नी) के परिश्रम से खेत सदा फसलों से भर जाते हैं। धरती जो पहले सुखी व काँटों से भरी थी अब हरी-भरी हो जाती है।

चे दोनों सब को सब्जी, अन्त, फल-दूध (आदि) देते हैं (किन्तु) स्वयं भूख-प्यास से व्याकुल रहते हैं। ये दोनों विचित्र (अनोखे) जन पालक हैं। (यह एक विडबना है कि दूसरों की भूख मिटाने वाले स्वयं भख का शिकार हैं।)

### **English Translation:**

With the hardwork of those two (the farmer and his wife) the fields are filled with crops. The land that was dry and full of thorns becomes fertile and full of greenry. They provide vegetables, grains, milk fruits to everybody but they themselves remain afflicted with hunger and thirst. These two are strange care-takers. (It is a paradox that those who alleviate the pangs of hunger of other people are themselves victims of hunger.)

## – • अभ्यास: (Exercise) •

प्रश्न: 1. उच्चारणं कुरुत- (उच्चारण कीजिए- Pronounce these words.)

सूर्यस्तपतु जीर्णम् शीतकालेऽपि वारयितुम् ग्रीष्मे सस्यपुर्णानि उपानहौ क्षुधा-तृषाकुलो

उत्तरम् – छात्र स्वयं उच्चारण करें।

प्रश्न: 2. श्लोकांशान् योजयत- (श्लोकांशो का मिलान कीजिए- Match the verses.)

(理) (क) गृहं जीर्णं न वर्षास् तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः। हलेन च कुदालेन या शुष्का कण्टकावृता। उपनाहौ न पदयो: सस्यपूर्णानि सर्वदा। शरीरे वसनानि नो। तयो: श्रमेण क्षेत्राणि वृष्टिं वारयितुं क्षमम्। धरित्री सरसा जाता

उत्तरम्- (क) गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारयितुम् क्षमम्। (ख) हलेन च कुदालेन तौ तु क्षेत्राणि कर्षत:।

(ग) उपानहौ न पादयो: शरीरे वसनानि नो।

\_earnCBSE मृतिकाः कर्मवीराः 🔉

(घ) तयो: श्रमेण क्षेत्राणि सस्यणूर्णानि स्ट्रिशः nCBSE.in	
प्रश्नः 3. उपयुक्तकथानानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति कथन के सामने 'आम्' और अनुपयुक्त कथन के सामने 'न' लिखिए— Wri	लिखत- (उपयुक्त te'आम'in front
of the correct statement and '7' opposite the incorrect ones.)	ac and muone
<b>यथा</b> - कृषका: शीतकालेऽपि कर्मठा: भवन्ति।	आम्
कृषकाः इलेन क्षेत्राणि न कर्षन्ति।	<del></del>
(क) कृषकाः सर्वेभ्यः अन्तं यच्छन्ति।	
(ख) कृषकाणां जीवनं कष्टप्रदं न भवति।	
(ग) कृषकः क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि करोति।	
(ङ) श्रमेण धरित्री सरसा भविति।	
उत्तरम्— (क) आम् (ख) न (ग) आम् (घ) न (ङ) प्रश्नः ४. मञ्जूषातः पर्यायवाचिषवानि चित्वा लिखत— (मञ्जूषा से समानार्थक पर	आम्।
Pick out synonyms from the box and write.)	3 IIV KIIGK
रवि: वस्त्राणि विशीर्णम् अधिकम् पृथ्वी पिपासा	
(क) वसनानि	
(क) प्रतान (ख) स्यै:	
(ग) तृषा	
(घ) विपुलम्	
(ङ) जीर्णम्	
(च) धरित्री उत्तरम्— (क) वस्त्राणि (ख) रवि: (ग) पिपासा (घ) अधिकम् (ङ) विशी	£ (_)
प्रश्नः 5. मञ्जूषातः विलोमपदानि चित्वा लिखत— (मञ्जूषा से विलोम पद चुनकर हि antonyms from the box and write.)	नखिए- Pick out
धनिकम् नीरसा अक्षमम् दुःखम् शीते पार्श्वे	
(क) सुखम्	
<ul><li>(寝) दूर</li><li>(刊) निर्धनम्</li></ul>	
∰ संस्कृत-VILearnCBSE.in	
** ***********************************	
(घ) क्षमम् LearnCBSE.in	
(च) सरसा	
उत्तरम्— (क) दुःखम् (ख) पारश्वे (ग) धनिकम् (घ) अक्षमम् (ङ) शीते	
प्रश्नः 6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत- (प्रश्नों के उत्तर लिखिए- Answer the following	questions.)
(क) कृषका: केन क्षेत्राणि कर्षन्ति।	
(ख) केषां कर्मवीरत्वं न नश्यति। (ग) श्रमेण का सरसा मवति।	
(घ) कृषका: सर्वेभ्य: किं किं यच्छन्ति।	
(ङ) कृषकात् दूरे कि तिष्ठति।	
उत्तरम्- (क) कृषकाः हलेन कुदालेन च क्षेत्राणि कर्षन्ति।	
(ख) कृषकाणां कर्मवीरत्वं न नश्यित।	
(ग) श्रमेण पृथ्वी (धारित्री) सरसा भवति।	
(घ) कृषकाः सर्वेभ्यः शाकम्, अन्नम्, दुग्धम्, फलम् च यच्छन्ति।	
<ul><li>(ङ) सुखम् कृषकात् दूरे तिचित।</li><li>अतिरिक्त-अभ्यासः</li></ul>	
(1) शुद्ध कथनानां समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनानां समक्षम् च 'न' इति लि	
कथन के सामने 'आम्' अशृद्ध कथन के सामने 'न' लिखिए। Write 'yes' t	o write and
write 'no' to wrong sentences.)	
(क) (i) कृषकः नित्यम् कर्मठः न भवति। (ii) जीर्णम् गृहम् वृष्टिं वारयितुम अक्षमम्।	************
(iii) कृषकः क्षुधा तृषाकुलः न भवति।	
(iv) कृषकस्य परिश्रमणेन धरा शस्यपूर्णा भवति।	***************************************
(v) कृषकस्य जीवनम् सुखमयम् अस्ति।	**********
(vi) शीते कृषकस्य शरीरं सस्वेदं अस्ति।	,
<b>उत्तरम्</b> - (i) न, (ii) आम्, (iii) न, (iv) आम्, (v) न, (vi) न।	
(2) तालिकापूर्ति कुरुत। (तालिकापूर्ति कीजिए— Complete the table.)	
एकवचन द्विवचन बहुवचन	3
(1) हलेन	* *
(ग्रं) कुदालेन	
Learn CB SE in the Learn CB SE	स: %

(iii) (iv)	क्षेत्रम् शरीरम्	LearnCB	SE.in	
(v)	***************************************	कर्मठौ	***************************************	
(vi)	***************************************	तौ	***************************************	
			iii) क्षेत्रे, क्षेत्राणि (iv) शरीरे, शरीराणि	
	र्न्मठः, कर्मठाः (vi) सः,			
(३) कर्तृपदं	बहुवचने परिवर्त्य वाक्य	गनि पुनः लिखत–	- (निम्नलिखित वाक्यों के कर्त्तापद को	þ
बहुवचन	म बदलकर वाक्य लि	खए— Rewrite th	ne sentences after changing the	
	into plural.) मेघौ जलम् वर्षत:।			
	कृषकः क्षेत्रम् कर्षति। शरीरे वस्त्रं न अस्ति।			
	सुखं दूरे तिष्ठति।	************		
	अहम् कृषकम् पश्यामि।	)	<del>«</del> · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
			र्षन्ति।, (iii) शरीरे वस्त्राणि न सन्ति।,	
	सुखानि दूरे तिष्ठन्ति।, (v	75. A		
(4) अधोदत्त	ान् <mark>प्रश्नान्</mark> उत्तरतः— (निम्	निर्विखत प्रश्नों के उ	त्तर दीजिए— Answer the following	
questio				
	केषां श्रमेण क्षेत्राणि सस्य			
	कृषिकस्य गृहं कदा वृष्टि		?	
	कृषिकस्य पादयोः कौ न			
(iv)	कृषिकस्य कि शीते कंपम	ायं भवति?		
(v)	कृषिकाणां किंन नश्यति	?		
${ m s}$ त्तरम् $ (i)$	कृषिकाणां श्रमेण क्षेत्राणि	सस्यपूर्णानि भवन्ति।		
(ii)	कृषिकस्य गृहं वर्षासु वृषि	टं वारयितुम् न क्षमम	न्।	
(iii)	कृषिकस्य पादयो: उपानहौ	न स्तः।		
(iv)	कृषिकस्य शरीरं शीते कंप	ामयं भवति।		
(v)	कृषिकाणां कर्मवीरत्वं न न	<b>।</b> स्यति।		
			OF !	
∰ संस्कृत–VI		LearnCB	SE.In	
	बहुविव	Loun CB	SE.in	
1) उचितं विक	कल्पम् चित्वा वाक्यपूर्ति	कुरुत- (उचित 1	विकल्प चुनकर वाक्यपूर्ति कीजिए	
	the correct option an			
	ं) कृषकाः		(हल:, हलेन, हलम्)	
(ii	) "" जीवनम	कष्टपूर्णम्।	(कृषकम्, कृषकस्य, कृषकः)	
(iii	) कृषकाः	अन्नम् उत्पादयति।		
	)ग्रीष्मेत		(सूर्यम्, सूर्यः, सूर्य)	
( v	) कृषकाणां		( orrest created )	
	) 5.14.1.II	धरा सरसा भवात	। (श्रमम्, श्रमेन, श्रमेण)	1
<b>गरम</b> - (i) हले				
	न (ii) कृषकस्य (i	ii) सर्वेभ्यः (iv	) सूर्यः (७) श्रमेण।	
(ख) (i	तेन (ii) कृषकस्य (i ;) ग्रीष्ये शरीरं	ii) सर्वेभ्य: (iv.	) सूर्यः (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्)	
(ख) (ii	न (ii) कृषकस्य (i ;) ग्रीष्मे शरीरंदुरेहि	ii) सर्वेभ्य: (iv  । तिष्ठति।	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्)	
(ख) (i (ii (iii	तेन (ii) कृषकस्य (i ;) ग्रीष्मे शरीरं ;)दूरे हि ;) तौ कुदालेन क्षेत्राणि "	ii) सर्वेध्यः (iv । तिष्ठति। ।	) सूर्यः (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति)	
(ख) (i (ii (ii (ii	तंन (ii) कृषकस्य (i ;) ग्रीष्मे शरीरं	ii) सर्वेभ्यः (iv । तिष्ठति। । जलं वर्षन्ति।	) सूर्यः (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति) (मेघः, मेघौ, मेथाः)	
(理) (i (ii (ii (ii (i	ति (ii) कृषकस्य (i ) ग्रीष्मे शरीरं दूरे हि ।) दूरे हि ।) तौ कुदालेन क्षेत्रणि त्रिपुलं ) कप्पी	ii) सर्वेष्यः (iv । तिष्ठति। । जलं वर्षन्ति। त्वं न नश्यति।	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति) (मेघः, मेत्रौ, मेघाः) (कृषकानाम्, कृषकाम्, कृषकाणाम्)	
(ख) (i (ii (iii (ii (i (i (i	in (ii) कृषकस्य (i i) ग्रीष्मं शरोर  i) पूर्व हि i) तें कुदालेन क्षेत्राणि  [पूर्व हि i) तों कुदालेन क्षेत्राणि  [पूर्व हि i) कक्मवीर	ii) सर्वेभ्यः (iv । तिष्ठति। । जलं वर्षन्ति।चं न नश्यति। ) कर्षतः, (iv) मेर	) सूर्य: (v) श्रमेण। (संस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दु:खम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्तः) (मेघः, मेघी, मेघाः) (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) धाः, (v) कृषकाणाम्।	
(ख) (i (ii (ii (ii (i (ग (ग) (i	ान (ii) कृषकस्य (i ) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv । तिष्यति। । जलं वर्षन्ति। .त्वं न नश्यति। ) कर्षतः, (iv) मेर	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्त) (मेघः, मेजी, मेचाः) (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) धाः, (v) कृषकाणाम्। धाः + पि; तथा + आपि; तथ + आपि)	
(ख) (i (ii (ii) (ii (ii) (ii) (ग) (ii) संस्	in (ii) कृषकस्य (i ) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण।  (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्)  (सुखम्, दुःखम्, गृहम्)  (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति)  (मेघः, मेत्रौ, मेघाः)  (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्)  वाः, (v) कृषकाणाम्।  वा + पि; तथा + अपि; तथ + आपि)  मन्मम्, शा + कमन्मम्, शाक + अन्मम्)	
(ख) (i (ii (iii (ii (र रासम्– (i) सर (ग) (i	ान (ii) कृषकस्य (i  ) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv     तिष्ठति।     जलं वर्षति।वं न नश्यति। ) कर्षतः (iv) मेर +   (तः +   (तः) +   (तः)	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्त) (मेघः, मेजी, मेघाः) (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) वाः, (v) कृषकाणाम्। व्या + पि; तथा + अपि; तथ + आपि) मनम्, शा + कमनम्, शाक + अनम्) लौ, तृषा + अकुलौ, तृषा + आकुलौ)	
(ख) (i (ii (iii (ii (र रासम्– (i) सर (ग) (i	in (ii) कृषकस्य (i ) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv     तिष्ठति।     जलं वर्षति।वं न नश्यति। ) कर्षतः (iv) मेर +   (तः +   (तः) +   (तः)	) सूर्य: (v) श्रमेण।  (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्)  (सुखम्, दुःखम्, गृहम्)  (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति)  (मेघः, मेग्रौ, मेघाः)  (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्)  धाः, (v) कृषकाणाम्।  था + पि; तथा + अपि; तथ + आपि)  मन्मम्, शा + कमन्मम्, शाक + अन्मम्)  लौ, तृषा + अकुलौ, तृषा + आकुलौ)  (शीतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि.	>
(ख) (सं (सं (सं (स (स (स (ग) (स (स (स (स	in (ii) कृषकस्य (i  i) ग्रीष्मं शरोर  i) पूरे हि  j) तौ कुरालेन क्षेत्राणि "  ि) किप्तालेन क्षेत्राणि "  विपुलं  i) कर्मवीर  वेदम्, (ii) सुखम्, (iii  i) तथापि = "  i) शाकमन्मम् = "  i) तृषाकुलो = "  i) शीतकालेऽपि = ""	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण।  (संस्वेदम्, कंपमयम्, कच्टम्)  (सुखम्, दुःखम्, गृङम्)  (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्त)  (मेघः, मेग्रौ, मेघाः)  (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्)  वाः, (v) कृषकाणाम्।  या + पि; तथा + अपि; तथ + आपि)  मनम्, शा + कमनम्, शाक + अनम्)  लौ, तृषा + अकुलौ, तृषा + आकुलौ)  (शीतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि,	>
(ख) (सं (सं (सं (स (स (स (ग) (स (स (स (स	ान (ii) कृषकस्य (i  ) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दुःखम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति) (मेघः, मेषौ, मेथाः) (कुषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) धा: (v) कृषकाणाम्। धा + पि; तथा + अपि; तथ + आपि) मनम्, शा + कमनम्, शाक + अनम्। ली, तृषा + अकुली, तृषा + आकुली) (शीतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि, शीतका + लेऽपि) (कण्टका + वृता; कण्टका + आवृता;	>
(ख) (सं (सं (सं (सं (स् (स् (सं (सं (सं (सं	in (ii) कृषकस्य (i ;) ग्रीष्मं शारीर	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण।  (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (सुखम्, दु:खम्, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षन्त) (मेघः, मेषौ, मेथाः) (कृषकानाम्, कृषकम्णाम्)  था + पि; तथा + अपि; तथ + आपि)  मन्म, शा + कमन्नम्, शाक + अन्मम्) लौ, तृषा + अकुलौ, तृषा + आकुलौ) (शीतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि, शीतका + लेऽपि) (कण्टका + वृता; कण्टक + आवृता; कण्टक + आवृता)	<b>&gt;</b>
(ख) ( ii	in (ii) कृषकस्य (i  ;) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (कर्षति, कर्षतः, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षनः) (मेघः, मेघौ, मेघाः) (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) धाः, (v) कृषकाणाम्। धाः पि; तथा + अपि; तथ + आपि) मनम्, शा + कमनम्, शाक + अनम्। तौ, तथा + अकुलौ, त्या + आकुलौ (शौतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि, शौतका + कर्पि। (कण्टका + वृता; कण्टक + आवृता) कण्टक + आवृता) अनम् (म् + अ = म),	<b>&gt;</b>
(ख) (ii (iii (iii (ii (ii (ग) (i (iii (iii) त्र (iii) त्र	in (ii) कृषकस्य (i  i) ग्रीष्मं शारीर	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (कर्षति, कर्षतः, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षनः) (मेघः, मेघौ, मेघाः) (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) धाः, (v) कृषकाणाम्। धाः पि; तथा + अपि; तथ + आपि) मनम्, शा + कमनम्, शाक + अनम्। तौ, तथा + अकुलौ, त्या + आकुलौ (शौतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि, शौतका + कर्पि। (कण्टका + वृता; कण्टक + आवृता) कण्टक + आवृता) अनम् (म् + अ = म),	<b>&gt;</b>
(ख) (ii (iii (iii (ii (ii (ग) (i (iii (iii) त्र (iii) त्र	in (ii) कृषकस्य (i  ;) ग्रीष्मे शरीर	ii) सर्वेष्यः (iv	) सूर्य: (v) श्रमेण। (सस्वेदम्, कंपमयम्, कष्टम्) (कर्षति, कर्षतः, गृहम्) (कर्षति, कर्षतः, कर्षनः) (मेघः, मेघौ, मेघाः) (कृषकानाम्, कृषकम्, कृषकाणाम्) धाः, (v) कृषकाणाम्। धाः पि; तथा + अपि; तथ + आपि) मनम्, शा + कमनम्, शाक + अनम्। तौ, तथा + अकुलौ, त्या + आकुलौ (शौतकाले + ऽपि, शीतकाले + अपि, शौतका + कर्पि। (कण्टका + वृता; कण्टक + आवृता) कण्टक + आवृता) अनम् (म् + अ = म),	<b>&gt;</b>

LearnCBSE.i क्रिकिकाः कर्मवीराः 🚳